In the name of Allah the Most Gracious the Ever Merciful

بسم الله الرحمن الرحیم

Press Desk
Ahmadiyya Muslim Jamaat
INTERNATIONAL
(INDIA)

شعبہ پریس اینڈ میڈیا بھارت
Office Press & Media
Ahmadiyya Muslim Jama'at India,
Qadian-143516, Distt.Gurdaspur, Punjab, India.
Mobile: +91-99887 57988
Email: pressamjindia@gmail.com
Tel: +91-1872-500282
ahmadiyya_press ahmadiyyapressindia

(A Registered Religious and Charitable Society in India under the Societies Registration Act XXI 1860)

زیر حوالہ/Ref **SPM-493**
تاریخ/Date **07-03-2026**

वैश्विक मुस्लिम नेता ने मुस्लिम देशों में पश्चिमी हस्तक्षेप की निंदा की, इस्लामी देशों से शांतिपूर्ण एकता स्थापित करने और सुरक्षा के लिए पश्चिमी शक्तियों के बजाय अल्लाह पर भरोसा करने का आह्वान किया

अपने साप्ताहिक शुक्रवार ख़ुत्बे के दौरान, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने मुस्लिम देशों को सलाह दी कि वे अपनी समृद्धि के लिए बड़ी शक्तियों के बजाय अल्लाह तआला पर भरोसा करें, आपसी एकता को प्राथमिकता दें और मध्य-पूर्व में जारी संघर्ष का शांतिपूर्ण समाधान खोजने के लिए प्रयास करें।

अहमदिया मुस्लिम जमाअत के विश्व प्रमुख, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने अपने साप्ताहिक शुक्रवार ख़ुत्बे में कहा कि मुस्लिम विश्व को अपनी सुरक्षा के लिए पश्चिमी शक्तियों पर निर्भरता छोड़ देनी चाहिए और उन लोगों की साज़िशों से बचने के लिए शांतिपूर्ण ढंग से एकजुट होना चाहिए जो उन्हें नुकसान पहुँचाना चाहते हैं।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा:

"संयुक्त राज्य अमेरिका ने कई मुस्लिम देशों में सैन्य ठिकाने स्थापित किए हैं। लेकिन किस उद्देश्य से? आखिर ये देश किससे ख़तरे में थे? वास्तव में, यही शक्तियाँ स्वयं उन ख़तरों को उत्पन्न करने वाली थीं। इसके बाद यह कथा प्रस्तुत की गई कि ये [मुस्लिम] देश ख़तरे में हैं, और इसलिए उनकी सुरक्षा के लिए सैन्य ठिकानों की स्थापना आवश्यक है।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने आगे कहा:

"इन सैन्य ठिकानों की उपस्थिति के कारण अरब देशों पर हमलों की संभावना बढ़ गई, और अंततः ऐसे हमले हुए भी। परिणामस्वरूप उनकी अर्थव्यवस्थाएँ भी गंभीर रूप से प्रभावित हो रही हैं... फिर भी जिन शक्तियों से मुसलमानों को वास्तव में ख़तरा हो सकता है, उनके विरुद्ध ये शक्तियाँ कभी अपनी ताक़त या हथियारों का प्रयोग नहीं करेंगी।"

यूनाइटेड किंगडम के टिलफ़ोर्ड स्थित मुबारक मस्जिद से, जो बीस मिलियन अहमदी मुसलमानों के वैश्विक समुदाय का मुख्यालय है, संबोधित करते हुए उन्होंने चेतावनी दी कि मध्य-पूर्व का संघर्ष आसानी से नियंत्रण से बाहर हो सकता है, और यदि यह युद्ध जारी रहा तो अरब देशों को सबसे अधिक नुकसान उठाना पड़ेगा।

जब यह युद्ध खाड़ी क्षेत्र तक फैल रहा है, तो हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा कि पश्चिमी शक्तियाँ मुस्लिम विश्व के भीतर मौजूद विभाजनों का लाभ उठाने का प्रयास कर रही हैं।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा:

"मुस्लिम देशों की सरकारों, उनके राजनेताओं और शासकों को अपने व्यक्तिगत हितों को एक ओर रख देना चाहिए और इसके बजाय मुस्लिम उम्मत की एकता के लिए प्रयास करना चाहिए।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा:

"पश्चिमी शक्तियों ने मुस्लिम देशों के भीतर अशांति को भड़काया, और फिर धीरे-धीरे उसी अशांति को बढ़ावा देकर उसे एक देश से दूसरे देश तक फैलाते रहे। ऐसा प्रतीत होता है कि वे अपनी शक्ति का उपयोग इन देशों के संसाधनों पर नियंत्रण स्थापित करने और उन्हें अपने प्रभाव में लेने के लिए करना चाहते थे।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने आगे सलाह दी कि मुसलमानों को अपनी सुरक्षा और समृद्धि के लिए पश्चिमी शक्तियों पर निर्भर नहीं होना चाहिए।

"उन्हें [मुस्लिम देशों को] संसार की महान शक्तियों को अपना ईश्वर नहीं समझना चाहिए, क्योंकि केवल अल्लाह तआला की शक्ति ही सदैव रहने वाली है। यदि इन बड़ी शक्तियों को अंतिम अधिकार मान लिया गया, तो वे धीरे-धीरे पूरे मुस्लिम विश्व पर, एक-एक देश करके, नियंत्रण स्थापित कर लेंगी। इन सांसारिक शक्तियों ने पहले ही विश्व की शांति और स्थिरता को नष्ट कर दिया है, और विशेष रूप से मुस्लिम विश्व की शांति को भी, और भविष्य में भी वे ऐसा ही करती रहेंगी।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा कि संयुक्त राज्य अमेरिका यह दावा करता है कि वह ईरान पर हमला करके वहाँ के लोगों को, विशेष रूप से महिलाओं को, स्वतंत्र कराना चाहता है। किंतु इस संदर्भ में उन्होंने एक स्पेनी यूरोपीय सांसद का कथन प्रस्तुत किया, जिन्होंने कहा कि यह दावा असत्य है कि यह युद्ध ईरानी महिलाओं की स्वतंत्रता के लिए लड़ा जा रहा है।

आइरीन मोन्टेरो ने कहा:

"किसी भी महिला को कभी अमेरिकी बमों या अवैध आक्रमण द्वारा स्वतंत्र नहीं कराया गया है... और यह ईरान में भी नहीं होगा।"

पश्चिम में निर्दोष मुस्लिम नागरिकों के जीवन के प्रति अपनाए जाने वाले दोहरे मापदंडों पर टिप्पणी करते हुए, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा:

“यदि पश्चिमी देशों की स्थिति पर दृष्टि डाली जाए, तो कुछ टिप्पणीकार स्वयं यह लिखने लगे हैं कि यदि इस्राइल, संयुक्त राज्य अमेरिका या किसी भी पश्चिमी देश में कोई हमला हो जाए और उनके कुछ ही बच्चे मारे जाएँ, तो समाचार पत्र कई दिनों तक लगातार स्तंभों पर स्तंभ लिखकर आक्रोश व्यक्त करते हैं। किंतु ईरान में किसी विद्यालय पर बम गिराया जाता है और सैकड़ों बच्चे मारे जाते हैं, तो शायद ही कोई अपनी आवाज़ उठाता है। यही स्थिति फ़िलिस्तीन में भी थी, और अब वही ईरान में भी देखने को मिल रही है। ऐसा प्रतीत होता है मानो उनके दृष्टिकोण में एक मुसलमान के जीवन का कोई विशेष मूल्य नहीं है।”

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने संयुक्त राज्य अमेरिका की उस दबावपूर्ण नीति की निंदा की, जिसके अंतर्गत वह उन देशों को धमकाता है जो उसकी माँगों का पालन नहीं करते।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा:

“जो देश युद्धों में भाग लेने से इंकार करते हैं, उन पर प्रतिबंध और दंडात्मक कदम लागू किए जाते हैं... ऐसी परिस्थितियों में न्याय शेष नहीं रहता। और जब न्याय समाप्त हो जाता है, तो विनाश अनिवार्य रूप से उसका अनुसरण करता है।”

संघर्ष के विषय में स्पेन की सरकार के रुख की प्रशंसा करते हुए, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा कि स्पेन के प्रधानमंत्री **पेद्रो सांचेज़** ने “यह कहने का साहस दिखाया कि स्पेन न तो युद्ध में भाग लेगा और न ही अपने सैन्य ठिकानों को इसके लिए उपलब्ध कराएगा।”

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा कि जब कुछ टिप्पणीकार यह कहते हैं कि संयुक्त राज्य अमेरिका आर्थिक हानि झेल रहा है और युद्ध का वित्तीय बोझ उठा रहा है, तो यह केवल एक अनुमान है। उन्होंने कहा कि शक्तिशाली राष्ट्र “हर मामले की अत्यंत सूक्ष्म गणना करते हैं” और “किसी भी कदम से पहले व्यापक आकलन करते हैं।” उन्होंने कहा कि इसके विपरीत, संभावना यह है कि अरब देशों को “उनकी रक्षा के नाम पर” इन भारी खर्चों को वहन करने के लिए बाध्य किया जाएगा।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा:

“एक ओर उनके तेल उत्पादन में बाधा उत्पन्न हो रही है और महँगाई बढ़ रही है... जबकि दूसरी ओर उन्हें इन अत्यधिक खर्चों को वहन करने के लिए मजबूर किया जा रहा है, जो धीरे-धीरे उनके वित्तीय भंडार को कम कर देंगे या समाप्त कर देंगे। अंततः अरब विश्व को गंभीर आर्थिक क्षति उठानी पड़ेगी। यद्यपि पश्चिमी देशों को भी कुछ हानि हो सकती है, परंतु सबसे अधिक नुकसान अरब देशों को ही होगा।”

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा कि उनके विचार में और विभिन्न विश्लेषकों की राय के अनुसार, एक विश्व युद्ध पहले ही आरंभ हो चुका है, किंतु अब भी यदि मुस्लिम विश्व एकजुट हो जाए तो वह स्वयं को और अधिक क्षति से बचा सकता है।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा:

“मुस्लिम विश्व को प्रयास करना चाहिए कि वह शांतिप्रिय बने और आपस में भाईचारे के साथ जीवन व्यतीत करे। यही इस्लाम की वास्तविक शिक्षा है, न कि यह कि वे ऐसे लोग बन जाएँ जो एक-दूसरे का गला काटते हों... केवल तभी हम संसार के आक्रमणों से अपनी रक्षा कर सकेंगे, अपनी गरिमा और सम्मान को बनाए रख सकेंगे, और इस्लाम के विरोधी तत्वों को हमें भीतर से विभाजित करने से रोक सकेंगे।”

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा कि अरब देशों और ईरान की सरकार को मेल-मिलाप का मार्ग खोजने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने कहा:

“यह बताया गया है कि चीन और कुछ अन्य देशों, जिनमें पाकिस्तान भी शामिल है, ने शांति स्थापित करने में भूमिका निभाने की पेशकश की है। केवल यही आशा की जा सकती है कि मुस्लिम विश्व इस विषय के महत्व को समझे।”

अपने संबोधन के अंत में, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने विश्व में शांति के लिए दुआ की और अहमदिया मुस्लिम जमाअत के सदस्यों से आग्रह किया कि वे भी संसार में शांति स्थापित होने तथा हर प्रकार के अन्याय और अत्याचार के अंत के लिए दुआ करें।

Tariq Ahmad K
Incharge Press & Media,
Ahmadiyya Muslim Jama'at India.